शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मानव जीवन में 'तेलकटाहगाथा' की प्रासंगिकता

डॉ.ज्ञानादित्य शाक्य
सहायक प्राध्यापक
बौद्ध अध्ययन व सभ्यता संकाय
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर
उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित 'तेलकटाहगाथा' को पालि काव्य-साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना माना जाता है। यह ग्रन्थ बुद्धोपदिष्ट धर्म के मूलभूत तत्वों को प्रकाशित करता है। इसमें बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक दोनों ही पक्षों को प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ की विषयवस्तु काफी समृद्धशाली मानी जा सकती है। इसमें बुद्धवचन के गम्भीर एवं दार्शनिक तत्वों को बहुत की सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री के अध्ययन के द्वारा पाठक या श्रोता को न केवल धार्मिक एवं दार्शनिक तथ्यों का ज्ञान होता है, अपितु सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों का भी ज्ञान होता है। जीवनोपयोगी मूल्यों को प्रकाशित करने के कारण इसे बहुत ही उच्चकोटि का स्थान प्राप्त है।

मुख्य शब्द : *पालि काव्य-साहित्य, आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर, तेलकटाहगाथा, महापरिनिर्वाण, चार आर्यसत्य, धम्मचक्कपवत्तनसुत्त, त्रिरत्न, त्रिलक्षण, शील, समाधि, प्रज्ञा, नैतिकता, दान, सदाचार, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, विपस्सना एवं प्रतीत्य-समुत्पाद।*

प्रस्तावना

पालि काव्य-साहित्य की रचना का मूल आधार पालि तिपिटक साहित्य ही रहा है। पालि काव्य-साहित्य की वर्ण्य-सामग्री बुद्धवचन है। बुद्धवचन की विषयवस्तु के रूप में बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ पालि काव्य-साहित्य ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र को भी काव्यात्मक शैली के माध्यम से बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया है - जो पालि काव्य-साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है। पालि तिपिटक साहित्य में सम्बोधि-प्राप्ति से लेकर महापरिनिर्वाण तक के काल में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित व अनुमोदित वाणी को ही मूल रूप से प्रकाशित किया गया है। प्रारम्भिक काव्य-साहित्य में उनके बाल्यकाल की चर्चा बहुत ही कम मात्रा में देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिक पालि काव्य-साहित्य में उनके बाल्यकाल से लेकर महापरिनिर्वाण काल तक की अवधि की घटनाओं तथा उनके द्वारा उपदेशित धर्म को बहुत ही सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया गया है। आधुनिक पालि काव्य-साहित्य ने अपनी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काव्य रचनाओं के माध्यम से विश्व साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। आधुनिक पालि काव्य-साहित्य ने धर्म-दर्शन के साथ-साथ विश्व की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक व साहित्यिक वातावरण को भी प्रकाशित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसीलिए आधुनिक पालि काव्य-साहित्य सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक प्रेरणास्रोत है। इसी सन्दर्भ में आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित 'तेलकटाहगाथा' का पालि काव्य-साहित्य में अति विशिष्ट स्थान है। इसकी रचना तेरहवीं शताब्दी एवं चैदहवीं शताब्दी के मध्य में की गयी है।1

'तेलकटाहगाथा' में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित त्रिरत्न, त्रिलक्षण, शील, समाधि, प्रज्ञा, नैतिकता, दान, सदाचार, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, विपस्सना एवं प्रतीत्य-समुत्पाद आदि धार्मिक तत्वों को मूलाधार बनाकर सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से सौ पालि गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। इसमें बुद्धोपदिष्ट धर्म-दर्शन को अत्यधिक सरल एवं सुबोध शैली में पाठकों एवं श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। अपने अनूदित ग्रन्थ की सम्पादकीय में तेलकटाहगाथा की विषयवस्तु एवं गाथाओं की संख्या को अभिव्यक्त करते हुए त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित कहते हैं कि इस ग्रन्थ में कुल सौ गाथाएँ हैं, जो बड़ी ही रोचक तथा धर्म-रस से भरी हैं। प्रारम्भ में राज-स्तुति, बुद्ध, धम्म एवं संघ की वन्दना के बाद जो धर्मोपदेश की गाथाएँ आई हैं, वे पाठक को बरबस थोड़ी देर के लिए अपने में भुला लेती हैं।2 इस ग्रन्थ में विद्यमान सौ पालि गाथाओं को पाठकों, श्रोताओं, जिज्ञासुओं एवं धार्मिक व्यक्तियों के अध्ययन की सुविधा हेतु छब्बीस बिन्दुओं (शीर्षकों) के माध्यम से प्रकाशित किया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं - राज-स्तुति, बुद्ध-वन्दना, धम्म-वन्दना, संघ-वन्दना, त्रिरत्न-वन्दना, लंकेश्वर के गुण, धर्माचरण, मरण-संज्ञा, अनित्य-संज्ञा, भव-अनभिरति-संज्ञा, कायविरति-संज्ञा, दुःख-संज्ञा, अशुभ-संज्ञा, अनात्म-संज्ञा, प्रतिकूल-मनस्कार, हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ, सुरापान, पाप का फल, प्रणिधि, मरणानुस्मृति, पुण्य-क्रिया, प्रतीत्य-समुत्पाद एवं कर्तव्य।

तेलकटाहगाथा में वर्णित सामग्री से ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी विषयवस्तु अत्यधिक सरल, सुगम एवं सुबोध है, जिसे न केवल पालि-साहित्य के विद्वान, अपितु छात्र, पाठक, शोधार्थी, साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले एवं श्रद्धालुजन भी इसे पढ़कर या सुनकर समझ सकते हैं। इसमें वर्णित सामग्री बहुत ही रोचक, आकर्षक एवं सुन्दर है जिसके कारण ग्रन्थ में अत्यधिक उत्सुकता का तत्व सन्निहित है। विषयवस्तु के रुचिपूर्ण होने के कारण पाठक या श्रोता को इसमें वर्णित विषयवस्तु को बार-बार पढ़ने या सुनने के लिए प्रेरित करती रहती है। इसकी प्रासंगिकता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

पालि-साहित्य मूलरूप से बुद्धवचन की ही व्याख्या करता है। बुद्धवचन में मूलरूप से चार आर्यसत्य की व्याख्या की गयी है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि चार आर्यसत्य हैं जिसकी संक्षिप्त व्याख्या 'धम्मचक्कपवत्तनसुत्त' में की गयी है। समस्त पालि-साहित्य में चार आर्यसत्य को शील, समाधि, प्रज्ञा, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण, विपश्यना, कर्मवाद का सिद्धान्त, त्रिलक्षण3 एवं प्रतीत्य-समुत्पाद आदि के रूप में व्याख्यास्वरूप देखा जा सकता है। बुद्धोपदिष्ट धर्म अत्यधिक गम्भीर, दुरूह एवं दुःखेन-साक्षात्करणीय है। बुद्धवचन की इसी गम्भीरता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एवं दुरूहता को दूर करके पालि-साहित्य की भाषा को आसान एवं सरल बनाने के कारण ही कालान्तर में अनुपालि-साहित्य, पालि अट्ठकथा-साहित्य4, पालि टीका-साहित्य, पालि वंस-साहित्य5, पालि काव्य-साहित्य, पालि व्याकरण-साहित्य6, पालि अलंकार-साहित्य एवं पालि छन्द-साहित्य का विकास सम्भव हो पाया।

तेलकटाहगाथा में बुद्धोपदिष्ट धर्म

तेलकटाहगाथा एक ऐसी काव्य-रचना है, जो बुद्धोपदिष्ट धर्म के मूलभूत तत्वों को प्रकाशित करती है। इसमें बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक दोनों ही पक्षों को पालि गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित त्रिरत्न, त्रिलक्षण, शील, समाधि, प्रज्ञा, नैतिकता, दान, सदाचार, आर्य अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण7, विपश्यना एवं प्रतीत्य-समुत्पाद धार्मिक आदि तत्वों को ही मूलाधार बनाकर इसमें बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से सौ पालि गाथाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। इसमें बुद्धोपदिष्ट धर्म-दर्शन को अत्यधिक आकर्षक, सरल एवं सुबोध भाषा-शैली के माध्यम से पाठकों एवं श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इसमें वर्णित धर्म-दर्शन के तत्वों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है -

तेलकटाहगाथा में कुल छब्बीस8 शीर्षकों के माध्यम से बौद्ध धर्म-दर्शन के महत्वपूर्ण विषयों को काव्यात्मक शैली में प्रकाशित किया गया है। इसमें वर्णित राज-स्तुति के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से अकुशल प्रवृत्तियों का परित्याग करके सद्गुणों के विकास पर बल दिया गया है। बुद्ध-वन्दना के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की धर्म-काया को प्रकाशित किया गया है। धम्म-वन्दना के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से धर्म को संसार रूपी महासागर से पार जाने के लिये पुल के समान बतलाया है। संघ-वन्दना के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से संघ को अप्रमाण क्षेत्र बतलाया है। त्रिरत्न-वन्दना के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से त्रिरत्न को निर्वाण प्राप्ति का उपाय बतलाया है। लंकेश्वर के गुण के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से जागरण शील होकर धर्माचरण पर बल दिया गया है। धर्माचरण के अन्तर्गत तीन गाथापद के माध्यम से अप्रमादी होकर त्रिलक्षण एवं ब्रह्मविहार रूपी धर्मों का सतत् अभ्यास करते हुए दुःख-मुक्ति हेतु निरन्तर बल दिया गया है। मरण-संज्ञा के अन्तर्गत उन्नीस गाथापदों के माध्यम से संस्कारों की अनित्यता, मृत्यु की अनित्यता, कुशल-चित्त की एकाग्रता एवं तृष्णा के प्रहाण पर बल दिया गया है। अनित्य-संज्ञा के अन्तर्गत पाँच गाथापद के माध्यम से मनुष्य की भौतिक काया की नश्वरता, कुशल कर्मों के सम्पादन एवं धर्मपालन पर बल दिया गया है। भव-अनभिरति-संज्ञा के अन्तर्गत ग्यारह गाथापद के माध्यम से लोक में दुःख की अधिकता, सुख की अल्पता, प्राकृतिक सौन्दर्य की निस्सारता, मानव जीवन की निस्सारता, भौतिक सम्पत्ति की निस्सारता एवं भव के प्रति अनासक्ति-भाव पर बल दिया गया है। काय-विरति-संज्ञा के अन्तर्गत तीन गाथापद के माध्यम से भौतिक काया की यर्थाथता एवं भौतिक काया के प्रति अनासक्ति भाव पर बल दिया गया है। दुःख-संज्ञा के अन्तर्गत चार गाथापद के माध्यम से दुःख की अधिकता दुःख के विनाश हेतु कुशल कर्मों का सम्पादन करते हुए धर्माचरण पर बल दिया गया है। अशुभ-संज्ञा के अन्तर्गत तीन गाथापदों के माध्यम से भौतिक काया को अशुभ जानकर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इसकी यथार्थता का चिन्तन करते हुए काया के प्रति आसक्ति भव को प्रादुभूत करने पर बल दिया गया है। इसके साथ ही अशुभ भावना एवं विपश्यना भावना का अभ्यास करते हुए निरन्तर धर्म के अनुशीलन पर बल दिया गया है। अनात्म-संज्ञा के अन्तर्गत आठ गाथापदों के माध्यम से लोक में उत्पाद-व्यय के सतत् प्रवाह की निस्सारता, पाँच स्कन्धों की निस्सारता एवं अनात्म-संज्ञा की भावना पर बल दिया गया है। प्रतिकूल-मनस्कार के अन्तर्गत चैदह गाथापदों के माध्यम से शरीर की सारहीनता का चिन्तन करते हुए अशुभ भावना के अभ्यास पर बल दिया गया है। इसके साथ ही जीवन में सुगति की प्राप्ति हेतु कुशल कर्मों के सम्पादन पर बल दिया गया है। हिंसा के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से प्राणातिपात के दुःखद विपाक को स्पष्ट करते हुए इससेे विरत रहने पर बल दिया गया है। चोरी के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से अदत्तादान रूपी अकुशल कर्म में भावी जीवन में प्राप्त होने वाले दुःखद विपाकों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। व्यभिचार के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से व्यभिचार के कारण वर्तमान गृहस्थ जीवन और भावी जीवन में प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। झूठ के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से असत्य भाषण करने वाले व्यक्ति को मानव जीवन में प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। सुरापान के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से सुरापान से वर्तमान जीवन एवं भविष्य के विभिन्न भवों में ¬प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। पाप का फल के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से पापकर्मों के दुःखद विपाकों को प्रकाशित किया गया है। प्रणिधि के अन्तर्गत दो गाथापदों के माध्यम से त्रिरत्न एवं भक्ति भावना के महत्व को प्रकाशित करते हुए मुदिता ब्रह्मविहार भावना के विकास पर बल दिया गया है। मरणानुस्मृति के अन्तर्गत तीन गाथापदों के माध्यम से मानव शरीर को मल-मूत्र, रोग एवं बुढ़ापा आदि विभिन्न गन्दगियों से परिपूर्ण जिगुप्सनीय वस्तु के रूप प्रस्तुत करते हुए शरीर की यथार्थता को प्रकाशित किया गया है। मृत्यु की अनिवार्यता को प्रकाशित करते हुए इसे नित्य एवं शाश्वत वस्तु के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसके बाद व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में उत्कृष्टता की प्राप्ति के लिये मरणानुस्मृति भावना के सम्यक् अभ्यास पर बल दिया गया है। पुण्य-क्रिया के अन्तर्गत एक गाथापद के माध्यम से दान आदि क्रियाओं की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। जीवन में विकास एवं सुख-शान्ति की उपलब्धि हेतु दान एक श्रेष्ठ कर्म कहा गया है। दान जैसी पुण्य क्रिया व्यक्ति को जीवन के परमोद्देश्य निर्वाण एवं बुद्धत्व की प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है। प्रतीत्य-समुत्पाद के अन्तर्गत तीन गाथापदों के माध्यम से प्रतीत्य-समुत्पाद को परिभाषित करते हुए उसकी अनिवार्यता एवं व्यापकता को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही प्रतीत्य-समुत्पाद9 के प्रथम अंग अविद्या की उत्पत्ति को समस्त रोग, जरा एवं मृत्यु आदि दुःखों का हेतु बतलाया है तथा अविद्या के नाश से ही इन समस्त दुःखों का नाश करते हुए जन्म-मरण परम्परा को हमेशा के लिये नष्ट किया जा सकता है तथा कर्तव्य के अन्तर्गत आठ गाथापदों के माध्यम से भौतिक काया की अपेक्षा धर्म-काया को महत्त्व

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रदान करते हुए धर्म के अनुशीलन पर बल दिया गया है। चित्तमलों एवं पापकर्मों से मुक्त धर्मचारी व्यक्ति ही दीर्घकाल तक अपने सुकृत्यों के द्वारा इस लोक में टिका रहता है। पारमिता रूपी कुशल धर्मों का पालन करते हुए जीवन में सदैव ही उत्तम कर्मों के द्वारा समस्त जनता की भलाई पर बन दिया गया है। चित्तमलों का नाश करके क्षीणास्रव की पवित्र अवस्था की प्राप्ति पर बल दिया गया है। इसके साथ ही कल्याणमित्रों से सद्धर्म ग्रहण करते हुए उसके सम्यक् अनुशीलन द्वारा हमेशा ही निर्वाणाभिमुख बने रहने पर बल दिया गया है। निर्वाण प्राप्ति हेतु पुण्यकर्म का सम्पादन करते हुए समस्त लोक के कल्याण की पवित्र भावना के विकास पर भी विशेष बल दिया गया है।

तेलकटाहगाथा में सामाजिक दृष्टि

सामाजिक दृष्टि से तेलकटाहगाथा एक अति महत्वपूर्ण काव्य-रचना है। आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर ने सौ गाथापदों के माध्यम से बुद्धवचन के गम्भीर दार्शनिक पहलुओं के साथ-साथ सामाजिक पक्षों को भी को भलीभाँति प्रकाशित किया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने सदैव ही मानव को केन्द्र मानकर सद्धर्म को प्रकाशित किया है। मानव के आपसी सम्बन्धों के कारण ही समाज का निर्माण होता है। समाज में सुख-शान्ति की स्थापना के लिए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध ने सदाचार के नियमों के रूप में पंचशील धर्म अर्थात् पाँच शीलों का उपदेश दिया है। कवि ने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित पंचशील धर्म के महत्व को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया है। कवि ने प्राणातिपात के दुःखद विपाक को स्पष्ट करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। कवि ने अदत्तादान रूपी अकुशलकर्म में भावी जीवन में प्राप्त होने वाले दुःखद विपाकों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। कवि ने वर्तमान गृहस्थ जीवन और भावी जीवन में प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया गया है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि कामेसुमिच्छाचारा वेरमणि सिक्खापदं समादियामि अर्थात् मैं पर-स्त्री गमनादि, नीति विरुद्ध कामाचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।10 बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ धर्म के तृतीय शील के उल्लंघन के कारण ही व्यभिचार जैसी गम्भीर समस्या का आविर्भाव होता है। व्यभिचार की समस्या के कारण व्यक्तिगत एवं सामाजिक सुख-शान्ति भंग हो जाती है जिसके कारण भौतिक विकास ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक विकास भी बाधित हो जाता है। इस प्रकार से अत्यधिक कामुकतापूर्ण दुर्भावनाओं वाला व्यक्ति समाज में केवल अपराध एवं समस्याओं को ही जन्म देता है। समाज में फैली हुयी बलात्कार एवं व्यभिचार की समस्याओं में निरन्तर वृद्धि होने से तमाम नये-नये यौन रोगों की वृद्धि हो रही है।11 काममिथ्याचार (व्यभिचार) को मानव जीवन के पराभव का हेतु बतलाते हुए शाक्यमुनि गौतम बुद्ध कहते हैं कि जो अपनी पत्नी से असन्तुष्ट रहता है, वेश्याओं और पराई स्त्रियों के साथ दिखायी देता है, वह उसकी अवनति का कारण है।12

व्यभिचार एक अकुशल-कर्म है जो व्यक्ति को न केवल वर्तमान जीवन में दुःख देता है, अपितु भावी जीवन को दुःखद एवं नारकीय बना देता है। बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ धर्म के तृतीय शील के उल्लंघन के कारण ही व्यभिचार जैसी गम्भीर समस्या का आविर्भाव होता है।13 उन्होंने दीघनिकाय के ब्रह्मजाल-सुत्त14 में महिलाओं

की स्थिति और अधिक सुधारने के लिए दास-दासियों के क्रय-विक्रय पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। इसके साथ ही उन्होंने तत्कालीन श्रमण एवं ब्राह्मणों को समझाते हुए कहा कि उन्हें अपने व्यक्तिगत लाभ एवं उपभोग की भावना के वशीभूत होकर किसी भी अविवाहित कन्या या कुमारी को दान में नहीं लेना चाहिए; क्योंकि इस प्रकार की बुरी परम्पराओं पर अंकुश लगाकर ही नारी जाति की दयनीय स्थिति को सुधारा जा सकता है। आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर ने बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ धर्म के तृतीय शील के महत्व को स्वीकार किया है। व्यभिचार के दुष्परिणाम को अभिव्यक्त करते हुए कवि कहते हैं कि जो अलंघनीय दूसरे की स्त्री का सेवन करता है, वह पुरुष दूसरे जन्म में सर्वदा स्त्री होता है और भयानक विपत्ति झेलता है तथा वह (व्यभिचारिणी) स्त्री फिर स्त्रीपन से कभी नहीं छूटती है।15

आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर ने व्यभिचार के दुःखद विपाक के समान ही असत्य भाषण करने वाले व्यक्ति को मानव जीवन में प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों एवं सुरापान से वर्तमान जीवन एवं भविष्य के विभिन्न भवों में ¬प्राप्त होने वाले दुष्परिणामों को प्रकाशित करते हुए इससे विरत रहने पर बल दिया है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति बुद्धोपदिष्ट गृहस्थ धर्म के पाँच शीलों का सम्यक्रूपेण अनुशीलन करे, तो समाज में सर्वत्र सुख-शान्ति का वातावरण प्रादुर्भूत होगा। इस प्रकार से यह ग्रन्थ सामाजिक दृष्टि से एक अति महत्वपूर्ण काव्य-रचना माना जा सकता है।

तेलकटाहगाथा का साहित्यिक महत्त्व

साहित्यिक दृष्टि से तेलकटाहगाथा एक अति महत्वपूर्ण काव्य-रचना है। कवि ने सौ गाथापदों के माध्यम से बुद्धवचन के गम्भीर पहलुओं को भलीभाँति प्रकाशित किया है। इसमें वर्णित विषयवस्तु अति महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित है। इसमें वर्णित सामग्री बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षों की व्याख्या करती है। विषयवस्तु की दृष्टि से यह ग्रन्थ अति विशिष्ट काव्य-कृति है। इसमें वर्णित सामग्री इतनी विस्तृत है कि इसकी व्याख्या के लिए अट्ठकथा एवं टीका-ग्रन्थों के रूप में कई ग्रन्थों की रचना की जा सकती है।

निष्कर्ष

आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा में वर्णित सामग्री के अध्ययन के उपरान्त ऐसा कहा जा सकता है कि यह पालि-काव्य-साहित्य की एक अति विशिष्ट कृति है। इसमें बुद्धोपदिष्ट सद्धर्म के मौलिक तत्वों की विषयवस्तु को सौ काव्यमयी गाथापदों के माध्यम से बहुत ही सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध शैली में प्रस्तुत की गयी है। यह धार्मिक एवं दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। इस प्रकार से वर्तमान समाज के प्रत्येक मनुष्य के लिए आचार्य भदन्त कल्याणिय थेर द्वारा विरचित तेलकटाहगाथा एक श्रेष्ठ व जीवनोपयोगी पालि ग्रन्थ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अनागतवंस (मेत्तेय्य बुद्ध का इतिहास) (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 83

2. तेलकटाहगाथा (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, नई दिल्लीः सम्यक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 8

3. छकेसधातुवंस (शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के छह केश-धातुओं का इतिहास) (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 86-87

4. नामरूपसमास (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 8-10

5. उमादत्त शाक्य, पालि वंस-साहित्य का इतिहास, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2017, पृष्ठ 17-19

6. गन्धवंस (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2017, पृष्ठ 3

7. दाठावंस (शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की दन्त-धातु का इतिहास) (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2016, पृष्ठ 117-118

8. तेलकटाहगाथा (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, नई दिल्लीः सम्यक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 8-40

9. जिनालंकार (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2015, पृष्ठ 44

10. भदन्त बोधानन्द महास्थविर, बौद्ध चर्या पद्धति, लखनऊः भारतीय बौद्ध समिति, बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क, 2002, पृष्ठ 38

11. पञ्चगतिदीपनी (पाँच गतियों का प्रदीपन) (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 205-206

12. सुत्तनिपात (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, 2010, पृष्ठ 28

13. ज्ञानादित्य शाक्य, बौद्ध धर्म-दर्शन में ब्रह्मविहार-भावना, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस, 2013, पृष्ठ.214

14. दीघनिकायपालि (महावग्गो) (हिन्दी-अनुवाद-सहिता) (सम्पादक एवं अनुवादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 2009, पृष्ठ 328

15. तेलकटाहगाथा (अनुवादक) भिक्षु धर्मरक्षित, नई दिल्लीः सम्यक प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 36